यशपाल के उपन्यासों में उपन्यास में विस्थापन की पीड़ा

सरोज देवी शर्मा, पीएच.डी., विषय हिंदी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ राजस्थान।
डॉ. शिव चरण शर्मा, शोध निर्देशक, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ राजस्थान।

शोध सार

ग्यारह उपन्यासों की अपनी श्रखंला में यशपाल ने प्रमुख रूप से राजनीति, सामाजिक, , प्रेम और विवाह तथा कही –कहीं ऐतिहासिक विषयों पर अपनी कृतियों का निर्माण किया हैं। राजनैतीक उपन्यासों में भारतीय स्वतंत्रता आदोंलन और समकालीन राजनैतीक गतिविधियों को चित्रित कर भारतीय स्वांतत्रय का समांतर इतिहास लिख डाला है। इन गतिविधयों के चित्रण में दलीय राजनीति एंव सजीव चित्र मिलता है। कहीं कहीं सम्यवादी दल का खुला समर्थन भी पाया जाता है। सामाजिक चित्रण के अंतर्गत लेखक ने मध्यवर्ग को अपने चित्रण का केन्द्र बनाया है । इस वर्ग की पारिवारिक स्थिति, आर्थिक कठिनाईयों, सांप्रदायिकत, रस्मों–रिवाज आदि का यथार्थपरक चित्रण किया ळें

मूल शब्द – विस्थापन की पीड़ा

विस्थापन की पीड़ा लेखक की रूचि का विषय बन सभी उपन्यासों में उद्घाटित हुई है। लेखक ने नारी –शोषण का विरोध कर उसे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया है। नारी के संदर्भ में लेखक ने प्रेम –विवाह आदि प्रश्नों को उठाकर उनके पांरपारिक दृष्टिकोण पर प्रहार किया है। पुरूष–प्रधान व्यवस्था द्वारा मात्र भोग्या बनाने का उन्होन डटकर विरोध किया है। यौन संबधों के बारे में सामाजिक बंधंनों में वे कृत्रिमता देखते है तथा स्वच्छंद सम्बन्धों का समर्थन करते है। ऐतिहासिक विषयों में उन्होने सामन्तशाही के अभिजात वर्ग द्वारा दासों का शोषण दिखा कर वर्ग –संघर्ष का प्राचीन रूप स्पध्ट किया है, तो दूसरी ओर शस्त्रों की होड़ के पीछे दौड़ने की प्रवृति पर नाराजगी जाहीर करते हुए'विश्वशांति'की आवश्यकता पर बल दिया है। 'दादा कामरेड''दादा कामरेड', 'देश द्रोही',, 'पार्टी कामरेड', 'मनुष्य के रूप, झुठा सच' ' तथा 'मेरी तेरी उसकी बात', उपन्यासों में लेखक ने राजनैतिक गतिविधियों का चित्रण किया है। 'दादा कामरेड' में लेखक ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में होने वाले क्रांतिकारी संघटनो की गतिवधियों पर प्रकाश डाला है। सन् 1930 से लेकर सन् 1936 तक की गतिवविधियों का यह लेखा–जोखा है। उपन्यास की अनेक घटनाओं तथा 'हरीश' जैसे पात्र में लेखक की जीवनानूभूति की प्रति छवि देखी जा सकती है। 'देशद्रोही'सन् 1942 के भारत की गतिविधियों से प्रभावित है। द्वितीय महायुद्ध में कम्युनिष्ट की अंग्रेज –समर्थक नीति के कारण उन्हे 'देश– द्रोही' ठहराया था। लेखक ने उपन्यासों को इस तरह पिरोया है की कम्युनिस्टों को उपयुक्त आरोप से मुक्ति मिल सके। 'पार्टी कॉमरेड' सन् 1942 से 1946 तक के काल का चित्रण करता हुआ कम्युनिस्ट कार्य प्रणाली का विस्तार से विवेचन करता है तथा साथ –साथ नौसैनिक विद्रोह के समय के साम्राज्य विरोधी आंदोलन को मूर्त रूप दे जाता है। 'मनुष्य के रूप' वैसे सामाजिक विषयों को उपन्यास रहा है। पर लेखक ने उस विषयों को राजनैतिक पृष्ठ भूमि देकर यथार्थ बनाने की कोशिश की है। द्वितीय महायुद्ध के समय की अनेक राजनैतिक बातों का इस में विवरण है।'झूठा सच', 'तेरी मेरी उसकी बात' भारत के स्वंतत्रता आंदोलन का आँखो–देखा हाल ही है। सन् 1919 से 1948 तक की लंबी काल धारा में लेखक ने भारत का स्वतंत्रता सग्रंम, भारतीय राजनीति, अग्रेंजों का दमन, जातीय संगठन, नेताओं की स्वार्थसिद्धि, लुटपाट, आगजनी की घटनाएं आदि का चित्रण किया है। 'देश द्रोही' तथा 'पार्टी कामरेड' जैसे आंरम्भिक उपन्यासों में लेखक विषय –विवेचन में जो पक्षधरता की वृति थी। , 'मेरी तेरी उसकी बात' में लेखक की तटस्था उस पर हावी होती हुई दिखाई देती है। विषयगत तटस्थता लेखक को महान बताती है। 'मेरी तेरी उसकी बात' इस दृष्टि से लेखकिय स्तर को ऊंचा उठाता दिखाई देता है।

यशपाल मध्य वर्ग का चित्रण करनें में सिद्धहस्त है। उन्होंनें अपने सामाजिक उपन्यासों से मध्यवर्ग का पारिवारिक जीवन, उनकी आर्थिक समस्याएं, समाज के रस्मों –रिवाज, अंध–श्रधाएं, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, संर्कीणता , जातीय दुरविमान, तथा नारी की दुःस्थिति का चित्रण 'मनुष्यक

के रूप' में 'सोमा' की गाथा समाज के समूचे नारी वर्ग व्यवस्था बन के सामने आती है। पहाड़ी जीवन के जरीये समाज की संकीर्ण मनोधारणा को चित्रित कर विधवा नारी पर समाज द्वारा ढायें जाने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश किया हैं।

निष्कर्ष

'झूठा सच' की भोला पांधे की गली तो भारतीय जन मानस की प्रतिरूप ही है। समाज में निहित संप्रदायिकता, आर्थिक मजबूरी, विभाजन के प्रणाम स्वरूप तितर–बितर हुए पारिवारिक जीवन को लेखक ने बड़ी खुबी से चित्रित किया है। स्वार्थ के लिए संघर्ष, लूटपाट, आगजनी, जातिय द्वेष भावना के आदि के जरीयें परिस्थितियों मनुष्य को कैसे पुशुद्त बना देती है, इसका सुक्ष्मांकन देखते ही बनता है। 'मेरी तेरी उसकी बात' तो भारत के तीन पीढियों के सामाजिक सक्रमण की कहानी है। राजनिती सामाजिक जीवन पर बरी तरह अपना असर छोड़ जाती हैं पुरानी पीढ़ी में निहत संकीर्णता तथा नयी पीढ़ी की उदारमतवादिता खिाकर लेखक ने आधुनिक विचारों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। इस उपन्यास में भी 'मनुष्य के रूप' की सीमा तथा 'झूठा सच' की तारा की तरह उषा नामक पात्र का निर्माण नारी के आत्मनिर्भर होने पर बल दिया हैं। सामाजिक विषयों से इस विवेचन से पता चलता हैं कि लेखक अपने समूचे उपन्यासों में विभिन्न विषयों को एक साथ प्रस्तुत कर समाज के विशाल यथार्थ की अनूभुति दे जाता है।

संदर्भ सूची

1. यशपाल, 'दादा कामरेड', पृ0 6
2.आजकल : अक्तूबर, 1674 'लेखक और प्रतिबद्धता', पृ0 5
3.डॉ. शिवपाल सिंह, 'पंत का काव्य–शिल्प', पृ0 26
4.यशपाल, 'झूठा–सच' (देश का भविष्य भाग–2), पृ0 106
5.यशपाल, 'झूठा सच', पृ0 46–47

Quality Of Work... Never Ended...